ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका

वर्ष-16 अंक : 2 (पूर्णांक - 62) जून-अगस्त 2022

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की त्रैमासिक शोधपत्रिका

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख/रचना	पृष्ठ
1.	**मीरा-पद**	05
	1. **सन्त मीराबाई**	
	(1) नँदलाल सूँ मेरौ मन ..... (2) मेरि माई नैनन	
2.	**मीरा-प्रशस्ति**	06
	2. **आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त,** दतिया (मध्यप्रदेश)	
	मीरा की देन ये न्यारी	
3.	**सम्पादकीय**	07–10
	3. **प्रो. सत्यनारायण समदानी,** चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	
	कॉम सिविल कोड : राज्य का संवैधानिक कर्त्तव्य	
4.	**सन्त-भक्तपक्ष**	
	4. **डॉ. विभास गोस्वामी,** भरतपुर (राजस्थान)	
	'स्वामी हरिदास महिमामृत' के रचयिता :	11–13
	गोस्वामी नन्दकिशोरदास जी	
	5. **डॉ. दर्मियान सिंह भण्डारी,** चमियाला (उत्तराखण्ड)	
	कबीर का एकेश्वरवाद	14–18
	6. **रश्मिसिंह,** राँची (झारखण्ड)	
	संत कबीर : समकालीन समाज, दर्शन और साहित्य	19–23
	7. **डॉ. हरीश कुमार,** ब्यावर (राजस्थान)	
	राजस्थान की सन्त परम्परा में जाम्भोजी की सबदवाणी का वैशिष्ट्य	24–29
	8. **शीला बिश्नोई,** सूरतगढ़ (राजस्थान)	
	पर्यावरण संरक्षण की जम्भशिक्षा का बिश्नोई तथा	30–34
	गैर बिश्नोई समाज पर प्रभाव : एक अध्ययन	
	9. **आचार्य एन.लक्ष्मी अय्यर,** किशनगढ़ (राजस्थान)	
	आन्ध्र की मीरा वैंगमाम्बा के काव्य में चित्रित श्रीकृष्ण-भक्ति	35–38
	10. **डॉ. चंद्रकांत सिंह,** धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)	
	हिन्दी भक्ति काव्य में राम-महिमा	39–43
5.	**कला-संस्कृतिपक्ष**	
	11. **श्री ललित शर्मा,** झालावाड़ (राजस्थान)	
	मेट्रो सिटी संग्रहालय में झालावाड़ की अप्रकाशित कला धरोहर	44–52
	12. **डॉ. मुक्ति पाराशर,** कोटा (राजस्थान)	
	अप्रकाशित कलात्मक शिव मंदिर : बनियानी	53–56

हिंदी भक्ति-काव्य में राम-महिमा

- डॉ. चंद्रकांत सिंह

राम राई मो कौं अचिरज आवै, तेरा पार न कोई पावै।।
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, नेति नेति जे गावै।
सरणि तुम्हारी रहें निस बासुरि, तिन कौं तूँ न लखावै।।
संकर सेस सबै सुर मुनि जन, तिन कौं तूँ न जनावै।
तीनि लोक रटै रसना भरि, तिन कौं तूँ न दिखावै।।
दीन लीन राम रँग राते, तिन कौं तूँ संगि लावै।।[1]

संत दादू की उपर्युक्त पंक्तियों में हरि-लीला के प्रति कौतुक एवं आश्चर्य देखते ही बनता है। दादू मानते हैं कि राम की लीला को समझ पाना अत्यंत दूभर एवं श्रमसाध्य है। सुर, नर, मुनि कोई भी उनकी अकथ लीला को बिना उनकी कृपा के जान नहीं सकता। जो राम में लीन होकर राममय हो जाता है उसे ही राम के सच्चे स्वरूप का बोध होता है। वाकई, राम प्रभुता के पर्याय भर नहीं हैं बल्कि भारतीय जीवन-बोध हैं, जिन्हें जाने-समझे बगैर भारतीय सांस्कृतिक जीवन को नहीं समझा जा सकता। जीवन को कैसे महत्तम रूप दिया जाए ? जीवन में आदर्श का प्रतिफलन कैसे हो? इसे राम के बगैर भला कैसे जाना जा सकता है। मनुष्य के भीतर अपार ऊर्जा एवं संभावना है कि वह देवत्व से भर उठे। राम मनुष्य को देवत्व की ओर अग्रसर करने वाले आदर्श हैं जिनके जीवन, कर्म एवं व्यक्तित्व को देखकर सहज ही हर व्यक्ति को प्रेरणा एवं संबल मिलता है। मनुष्य जन्म की सार्थकता ही पूर्णत्व का विकास है और राम इसी पूर्णत्व के परिचायक हैं। राम केवल आराध्य भर नहीं हैं, उन्हें मात्र आराध्य समझना बड़ी भूल होगी। वे साधारण मनुष्य के भीतर भगवत्ता को विकसित करने वाले दिव्य स्वरूप हैं जिनका परस पाकर हर कोई जन्म-जन्मान्तर के पाश से मुक्त हो सकता है। उनके उदात्त चरित्र पर अनगिनत कवियों ने अब तक शोध किया है। वाल्मीकि रामायण, कम्ब रामायण, कृत्तिवासी रामायण आदि राम के चरित्र को देखने की भिन्न-भिन्न कोटियाँ हैं जिनसे राम की छवि पूर्ण होती है। भक्ति एवं दर्शन के क्षेत्र में अनगिनत सम्प्रदाय आए जिन्होंने वेदों के काल से अब तक प्रभुता और भगवत्ता का सुन्दर चित्र खींचा है। आगम-निगम परम्परा के जितने स्रोत हैं वे सभी चेतना की ऊर्ध्व-यात्रा पर बल देते हैं और चेतना की ऊर्ध्व-यात्रा राम के बिना संभव ही नहीं है। भक्तिकाल के कवि चेतना की ऊर्ध्व-यात्रा के जितने उपायों का प्रयोग करते हैं उन सभी को साधने की कला राम (हरि) के प्रसाद से मिलती है। आत्म साक्षात्कार के जितने सुन्दर अनुभव भारत में मिलते हैं उनमें राम रसायन की महिमा अपूर्व है जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता। एक तरह से कह सकते हैं कि भक्तिकाल के कवियों के लिए राम आस्था-पुंज थे जिन्हें पाकर पराजित एवं हताश जीवन को नूतन दिशा प्राप्त हो सकी। भारत और राम इन दो शब्दों को अलग-अलग नहीं मानना चाहिए। भारत की अस्तित्वगत संज्ञा राम के बगैर अधूरी है। जिसे हम भारतीय संस्कृति कहते हैं उसके भीतर अनस्यूत सार्थकता और गरिमा का दूसरा नाम राम है। भारत एक ऐसा देश है जिसके निवासी सदैव अहिंसा, त्याग, कर्तव्यपरायणता के लिए जाने जाते रहे हैं। सच्चाई एवं नेह के मनकों से गुँथी हुई भक्ति की गंगा सदैव उदास एवं हारे हुए को त्राण देती आयी है। धर्म की परिभाषा एवं स्वरूप की जितनी व्याख्याएँ संभव हैं वे